Two day Nationl Seminar
द्वि दिवसीया राष्ट्रीया संगोष्ठी
on
The Place and Importance of Shulba sutras in Indian Knowledge system
भारतीय ज्ञान परम्परा में शुल्बसूत्रों का स्थान एवं माहात्म्य निरूपण
on Feb 6-7,2026
organised by the Deptt. of Sanskrit, University of Jammu, Jammu.

भूमिका– संस्कृत वांग्मय में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, रामायण, महाभारत के साथ–साथ विविध महाकाव्यों, दशविधरूपकों, गद्य एवं चम्पू काव्यों की अवस्थिति चिरकाल से देखी जा सकती है, जिसमें षड् वेदांगों शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष वैदिक ज्ञानपद्धति को जानने के लिए अनिवार्य एवं अपरिहार्य माने जाते हैं। इन षड् वेदांगों में कल्प साहित्य आज सामाजिकों के मध्य अप्रासंगिक बनता जा रहा है। अतएव कल्प साहित्य को पुनः सामाजिकों से परिचित कराना उक्त वैदिक राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रमुख प्रयोजन है। महर्षि सायण कल्प की व्युत्पत्ति करते हुए कहते हैं कि ''कल्पयते समर्थ्यते याग प्रयोजनोऽत्र इति व्युत्पत्तिः'', अर्थात् कल्प का अर्थ है– यज्ञीय विधियों का समर्थन एवं प्रतिपादन। आचार्य विष्णुमित्र कल्प की दूसरी व्याख्या करते हुए कहते हैं कि जिसमें वैदिक कर्मों का व्यवस्थित रूप से वर्णन या प्रतिपादन होता है ''कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पना शास्त्रम्''। कल्प सूत्रों के चार भेद मिलते हैं वे हैं– श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्र। श्रौतसूत्रों में जहाँ विविध वैदिक यज्ञों का क्रमबद्ध वर्णन देखने को मिलता है, वहीं गृह्यसूत्रों में 16 संस्कार, 5 महायज्ञों, 7 पाकयज्ञों, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, पशुपालन तथा रोगनाशक विधियों का वर्णन है जबकि धर्मसूत्रों में नीति, धर्म, रीति, भाषाओं, चारों वर्णों तथा आश्रमों एवं सामाजिक नियमों का वर्णन है एवं शूल्बसूत्रों में यज्ञवेदी के निर्माण से सम्बद्ध नाप तथा प्रमुख वेदी आदि के नियमो का वर्णन है जिसमें भारतीय ज्यामिति के विकास का उत्कृष्ट रूप मिलता है। प्रमुख शुल्बसूत्र सात हैं– शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन शुल्बसूत्र तथा कृष्ण यजुर्वेद के मानव, बौधायन, आपस्तम्ब, मैत्रायणी, वाराह तथा बाधूल शुल्बसूत्र मिलते हैं। ऋग्वेद, सांमवेद, अथर्ववेद का कोई भी शुल्ब सूत्र उपलब्ध नहीं मिलता। प्राच्य तथा पाश्चात्य

(मैक्डानल) विद्वानों का अभिमत है कि वस्तुतः शुल्बसूत्र ही भारत के प्रमाणित शास्त्रीय सर्वप्राचीन ग्रन्थ कहे जा सकते हैं। शुल्बसूत्रों के अध्ययन से भारतीय ज्ञान परम्परा की प्राचीनता भी सिद्ध होती है। अतएव द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रमुख लक्ष्य कल्प साहित्य के एक अंग शुल्बसूत्रों की सामग्री को प्रकाश में लाना भी है।

विविध प्रकार के यज्ञ तो आज भी आयोजित होते है , किन्तु शास्त्रीय मान्यतानुसार न तो चितियों (ईंटों) का चयन होता है और न ही समिधा या यज्ञ सामग्री का और न ही यज्ञ वेदी निर्माण का। यज्ञ तो आध्यात्मिकता के परिपोषक होने के साथ–साथ शुद्धवातावरण एवं पर्यावरण के पोषक होते हैं। उपरोक्त संगोष्ठी सर्वथा नवीन एवं क्लिष्ट विषयवस्तु से सम्बन्धित है। अतएव विद्वत्जनों एवं शोधार्थियों से निवेदन है कि वह अपने–अपने शोधपत्रों में शुल्बसूत्रों की विषयवस्तु एवं उनके आधुनिक माहात्म्य तथा प्रासंगिकता परक शोधपत्र लिखकर शुल्बसूत्रों पर आधारित प्रस्तुत वैदिक राष्ट्रीय संगोष्ठी के लक्ष्य को साधने में हमारा सहयोग करें। अधोलिखित विषय भी उनके शोधपत्र के बिन्दु बन सकते हैं।

1. कल्पसूत्रों में शुल्बसूत्रों का स्थान निर्धारण एवं उसकी विषयवस्तु का विवेचन।
2. आधुनिक गणित शास्त्र पर शुल्बसूत्रों का प्रभाव।
3. वेदों मे शुल्बसूत्रों का स्थान निर्धारण एवं माहात्म्य निरूपण।
4. कात्यायन शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
5. कात्यायन शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।
6. कात्यायन शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।
7. मानव शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
8. मानव शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।
9. मानव शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।
10. बौधायन शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
11. बौधायन शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।

12. बौधायन शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।
13. आपस्तम्ब शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
14. आपस्तम्ब शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।
15. आपस्तम्ब शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।
16. मैत्रायणी शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
17. मैत्रायणी शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।
18. मैत्रायणी शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।
19. वाराह शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
20. वाराह शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।
21. वाराह शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।
22. वाधूल शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञीय विधियों का विवेचन।
23. वाधूल शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ वेदी निर्माण का विवेचन।
24. वाधूल शुल्बसूत्र में प्राप्त यज्ञ मण्डप में अवस्थित विविध पात्रों की उपयोगिता।

Note:- Participant can also prepare their Research paper on the topics- Shulbsutra and its areas of research, Mathematics before shulbsutras, units and instruments of measurement of yajna vedi through shulb sutras, Geometrical construction of yajna vedi through shulbsutras, Geometrical theorem, arithmetic operations and their application in the shulbsutras, Algebraic application, construction of fire altars and civil engineering, Role of shulbsutras in further development of mathematics.

आयोजन सचिव

10/12/25

प्रो. राम बहादुर
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

Head
P.G. Department of Sanskrit
University of Jammu
Jammu

Note-
In second day i.e. 07-02-2026, in the Morning, 9.30 to 10-30, practical work of Yagya vedi will be performed in Navgriha Vatika as per the rules of shulbsutras with Yagyotsava.

10/12/25

Kindly allow.

Head
P.G. Department of Sanskrit
University of Jammu
Jammu